Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12·2

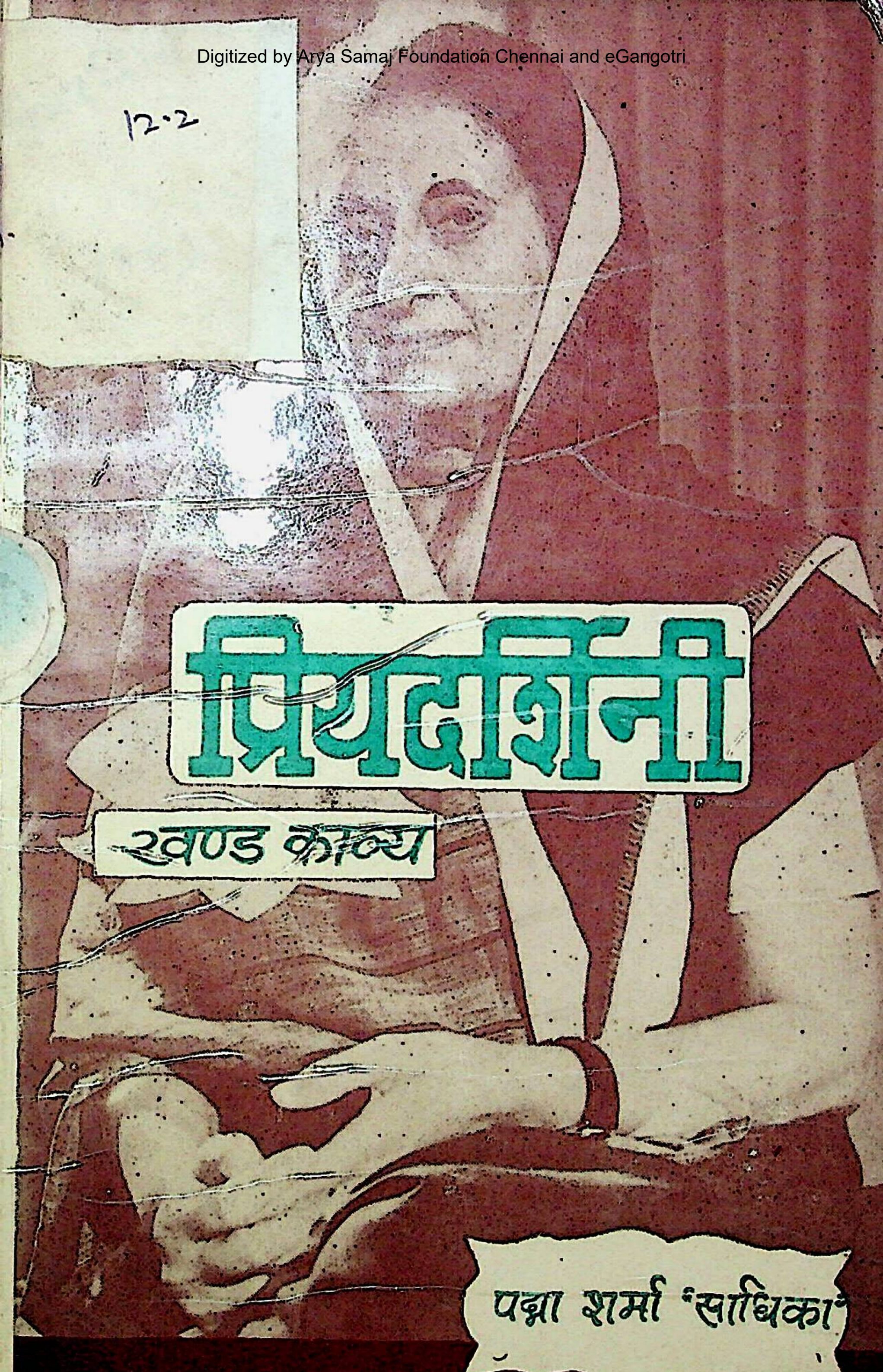

प्रियदर्शिनी

खण्ड काव्य

पद्मा शर्मा "साधिका"

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाणिनि-कन्या-अनुसन्धान
तिथी
पुस्तक 439/1
भारती पुस्तकालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियदर्शिनी

(खण्ड-काव्य)

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसंधान
तिथी.........
पु०सं०...439...
भारती पुस्तकालय

लेखिका

श्रीमती पद्मा शर्मा 'साधिका'

७३-साकेत, मेरठ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :

पुष्प प्रकाशन
द्वारा रा० प्र० राकेश
दौराला शुगर वर्क्स दौराला
(मेरठ)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण
इन्दिरा जी के जन्म दिन पर
१९ नवम्बर १९८५

सहयोग राशि :
२० रुपये सजिल्द
१५ रुपये साधारण

मुद्रक :
रत्न कुमार प्रेमी
प्रेमी प्रिंटिंग प्रेस, मेरठ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव सुमन

युग युगों तक तुम अमर हो,
इन्दिरा प्रियदर्शिनी।
ज्योत्सना हो भारती की,
गर्व-गौरव, वर्धिनी।

शान्ति की वरदायिनी थीं,
देश का गौरव थी तुम।
रत्न-गर्भा, भारती की,
कोख का सौरभ थी तुम।

सत्य निष्ठा हेतु ही तुम,
अग्रसर हो, गर्विणी।
देश हित में थीं समर्पित,
दृढ़-प्रतिज्ञा, दर्पिणी।

भारती की लाड़ली तुम,
मातृ-मस्तक का तिलक।
ओजमय वाणी तुम्हारी।
वीर सुन उठते पुलक।

कोटि कंठों में, स्वरों में,
एक ही झनकार है।
इण्डिया को "इन्दिरा माँ",
शक्ति का अवतार है।

दे रहे तुमको समर्पण,
आज धरती अरु गगन।
लो करो स्वीकार,
पद्मा 'साधिका' के ये सुमन।

—पद्मा 'साधिका'

तिथी........ पु०सं०........ भारती पुस्तकालय

प्रियदर्शिनी

इन्दिराजी

को

सादर

समर्पित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म निवेदन

'भारत रत्न'–श्रीमती इन्दिरा-प्रियदर्शिनी के विषय में कुछ लिखने का साहस करना सूर्य को दीपक दिखलाना है।

उस महती नारी की ओजस्विता, कर्मठता, लोकप्रियता, कार्यकुशलता, श्रेष्ठता एवं भव्यता ही लेखनी को गति प्रदान करती गई और यह तुच्छ प्रयास "प्रियदर्शिनी" खण्ड-काव्य के रूप में स्वत: ही सृजित हो गया।

भारत के महान इतिहास की जाज्वल्यमान ज्योति के समान वह प्रस्फुटित हुई और अपनी पूर्ण कला के साथ आलोकित होकर, इस पावन भू के कण-कण को प्रभासित कर, अनायास ही लुप्त हो गई।

जीवन के प्रत्येक उतार-चढ़ाव, हर्ष-शोक-संघर्ष, सफलता-विफलता, समर्थन एवं प्रतिरोध का जिस निर्भीकता-दृढ़ता तथा धैर्य के साथ उस महिमामयी नारी ने सामना किया वह अद्वितीय है।

इन्दिरा जी का जीवन बाल्यकाल से ही संघर्षमय रहा। घर व देश के वातावरण तथा घटनाओं ने उनको समय से पूर्व ही समझदार बना दिया था। मैं तो पांच वर्ष की आयु से अपनी ही नहीं अपितु अपने माता पिता की भी देखभाल करने लगी थी' यह था उनका कथन। इस प्रकार बीता था उनका बचपन।

यौवन के कुछ दिन के वैवाहिक जीवन के पश्चात् अकस्मात ही वैधव्य का दु:ख विधाता ने झोली में डाल दिया।

भारत की प्रधान मन्त्री बनने पर निरन्तर अनेक समस्याओं, विरोधों, मानवी व दैवी-विपत्तियों से जूझती रहीं और देश की अखंडता, एकता व मानवता का रक्षण करते-करते ही आहूत हो गईं।

अपूर्व क्षमता-योग्यता तथा दृढ़ता का परिचय उनके जीवन चरित्र से मिलता है जो कि आने वाले कल में गर्व के साथ स्मरण किया जाएगा।

अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक वे जूझती रहीं प्रत्येक चुनौती से। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व अपूर्व था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने भारतीय नारी की अद्भुत क्षमता का एक कीर्तिमान स्थापित किया है। ऐसा भव्य तथा गरिमामय जीवन सदियों में ही अवतरित होता है।

मेरे उनके परिवार से बहुत निकट के सम्बन्ध रहे। १९२१ के स्वतन्त्रता आन्दोलन में मेरे पूज्य पिता पं० राधाकृष्ण, पं० मोतीलाल नेहरू, राजर्षि टंडन, मौलाना आजाद आदि के साथ पूरे एक वर्ष तक जेल में रहे थे।

श्रीमती इन्दिरा जी की दादी ने मेरी माता से वचन लिया था कि "जब देश स्वतन्त्र हो और मैं न रहूँ तो तुम जवाहर के माथे पर तिलक अवश्य लगा देना।" जब देश स्वतन्त्र हुआ तो १९४७ में यह पुनीत कार्य अपनी माँ की ओर से मुझे करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और जब १९६६ में इन्दिरा जी चुनी गईं तब पुनः यह कार्य करने में उनके समक्ष उपस्थित हुई; जिस पर उन्होंने बड़ी आत्मीयता से मेरी शुभकामनाओं को स्वीकारा।

जब-जब भी वे विजयी हुईं चाहे चुनाव में अथवा युद्ध में, मैं उनको अपनी भावनाएं अर्पित करती रही। १९७१ के भारत पाक युद्ध की विजय प्राप्ति के पश्चात जब २७-१२-७१ को मेरी उनसे भेंट हुई और मैंने उनको बताया कि मेरे वीर पुत्र मेजर सुबोध ने बंगला देश को आजाद कराने में अपना योगदान किया है तो बड़ी उत्सुकता एवं उत्साह से उन्होंने पूछा कि वह "इस समय कहां है" तब मैंने सगर्व उत्तर दिया कि बंगला देश को मुक्त कराने के पश्चात् अब पश्चिमी सीमा पर सन्नद्ध है तो उन्होंने कहा "हमारा आशीर्वाद देना उस वीर को।"

यह था उनका देश-प्रेम जो कि जन-मन को छू लेता था और जिसके बल पर ही वे इतनी लोकप्रिय हुईं। वह घोरतम विषमता में भी हतोत्साहित होकर नहीं बैठीं और नारी का सबला रूप स्थापित करने में समर्थ होकर सदा अजेय शक्ति बनी रहीं। उस महामहिम नारी ने प्रत्येक चुनौती का डट कर सामना किया और अपनी निश्छलता, निर्भीकता, सरलता एवं एकात्मकता के कारण ही अनायास हमसे बिछुड़ गईं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी आकस्मिक मृत्यु ने भारत ही नहीं समस्त विश्व को हतप्रभ कर दिया और उसी घोर अपवाद के क्षणों में अश्रु-मसि से रचित यह "इन्दिरा–गाथा' किस प्रकार लिखी गई मैं स्वयं नहीं जानती।

इतना अवश्य है कि लिखने के पश्चात अति-उद्वेलित अन्तर को अपार शान्ति की अनुभूति हुई और ऐसा आभास हुआ कि मैं उस दिव्या को अंशतः श्रद्धा सुमन अर्पित कर सकी हूँ।

काव्य की विधा के गुण-ज्ञान-नियम व गरिमा के अनुरूप कुछ नहीं बन पड़ा है मात्र भावाभिव्यक्ति ही हो सकी है। प्रबुद्ध-जन मेरे इस दुस्साहस के लिए मुझे क्षमा करें क्योंकि भावातिरेक में त्रुटियाँ हो जाना स्वाभाविक ही नहीं, क्षम्य भी है।

वह नारी-रत्न अपनी गुणवत्ता के कारण जो अमिट छवि जन गन मन पर अंकित कर गई है वह अप्रतिम है। भारत के इतिहास के पृष्ठों पर उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है।

भारत की महानतम वीर नारियों की शृंखला में वे अप्रतिम कड़ी के रूप में सदैव स्मरण की जायेंगी।

इस पुस्तक के माध्यम से मैंने उनके ओजस्वी-कर्मठ-साहसी और देशनिष्ठ रूप को उजागर करने का प्रयास किया है जिससे आने वाली पीढ़ियाँ प्रेरणा-प्रोत्साहन एवं शिक्षा लेकर भारतीय नारी की महिमा एवं गरिमा से परिचित होकर स्वयं उनके वताए मार्ग पर चल कर अपने परिवार समाज व देश का नाम उज्ज्वल करने में समर्थ हो सकें। ऐसे वलिदानी, त्यागी और समर्पित महान विभूतियों का जीवन चरित्र प्रत्येक नागरिक पढ़े और अपनाए तभी वह देशोत्थान कर सकेगा।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने स्वयं वलिदानी बन कर अपने त्याग, उत्सर्ग और कर्तव्य-निष्ठा के द्वारा देश को एक दिशा प्रदान की है। उनके शुभ संकल्पों, कृत्यों एवं प्रेरक जीवन से प्रेरणा लेकर प्रत्येक युवा युवती देश के प्रति समर्पित होकर अपने परिवार-समाज तथा देश के लिये उपयोगी सिद्ध हो यही मेरा अभीष्ठ है।

उन सभी विशेषताओं और श्रेष्ठताओं को छूने का प्रयास मैंने किया है जो कि उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी।

प्रियदर्शिनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियदर्शिनी इन्दिरा गांधी के साथ, प्रस्तुत खण्डकाव्य की लेखिका की एक भेंट

बँगला देश के युद्ध में भारत की विजय पर लेखिका अपने पुत्र मेजर सुबोध के पराक्रम का उल्लेख करती हुई, इन्दिरा जी को अभिनन्दन-पत्र प्रस्तुत कर रही हैं। चित्र में इन्दिरा जी के बांये हाथ पर प्रसन्न मुद्रा में खड़ी लेखिका।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनैतिक जीवन में जो कुछ भी रहा हो क्योंकि देश-हितार्थ वही कर और सोच सकता है जिसके ऊपर उत्तरदायित्व हो। उन्होंने जो भी किया देश हितार्थ ही किया। इसीलिये वह देश-भक्त के सर्वोच्च आसन पर आसीन हुई।

अन्त में मैं—उन सभी साहित्यिक परिचित व स्नेही बन्धुओं की अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने मेरी टूटी-फूटी वाणी को अपना अपूर्व योगदान एवं प्रोत्साहन देकर कृतार्थ किया है। सर्वप्रथम आचार्य प्रभुदत्त स्वामी जिन्होंने पूर्ण मनोयोग से इस प्रयास को प्रोत्साहित किया और अपना अमूल्य सुझाव देकर इसका रूप सँवारा।

पं० जगन्नाथ व्यास, श्री राम प्रकाश 'राकेश' महा कवि ताराचन्द्र हारित आदि सभी बन्धुवरों ने यथेष्ठ सहयोग, प्रेरणा तथा शुभाशीष प्रदान कर मुझे कृतार्थ किया है। मैं उनके प्रति नत-मस्तक हूँ।

श्री राकेश जी ने तो अपने कुशल सम्पादन से इसको अपूर्वता प्रदान की है और प्रकाशन हेतु अपना अमूल्य समय देकर कृतार्थ किया है। मैं उनकी विशेष रूप से आभारी हूँ।

—पद्मा 'साधिका'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पद्म दीप' से 'प्रियदर्शिनी' तक पद्मा जी के साहित्य पर एक दृष्टि

रा० प्र० राकेश
राष्ट्रीय कवि लेखक एवं पत्रकार

गीत रचना के क्षेत्र में मेरी मान्यता है कि जब मन की कोमलता, भावना, सागर की लहरों में तरंगित होती है तो स्वतः ही गीत का जन्म हो जाता है। गीत की गुनगुनाहट जब कविता का रूप ले लेती है तब वह कविता कवि का जीवन बन जाती है और जीवन कविता बन जाता है। कविता का सबसे बड़ा गुण माधुर्य होता है और यह माधुर्य छन्द-रचना के माध्यम से ही उत्पन्न हो सकता है। हिन्दी काव्य में छन्द-रचना कविता के संस्कारों से जुड़ी हुई वह परम्परा है जिसे आदि कवि वाल्मीकि से लेकर महर्षि वेदव्यास तथा उनके परवर्ती अनेक महान रचनाकारों ने काव्यकारों को वरदान स्वरूप प्रदान की। कविता में यदि शब्द शरीर है तो उसकी गेयता आत्मा है। कविता की गेयता अथवा लयात्मकता, रसज्ञता को जन्म देती है और यह रसात्मकता छन्द-रचना के माध्यम से ही सम्भव है।

हिन्दी साहित्य में आदिकाल, भक्तिकाल, वीरगाथा काल और रीति काल इन चारों कालों में छन्द, पिंगल एवं विविधि अलंकारों से सजी-धजी कविता-वनिता अपने युगीन प्रभाव से जन-जीवन को प्रभावित करती रही और सहजता के साथ कविता के पाठकों और श्रोताओं ने भी उसमें जी भर कर आनन्द लिया। ग्रामीण अंचल में भी दिन भर के हारे थके किसान-मजदूर और गोधूली में लौटे चरवाहे रात को चौपालों और अलाव पर बैठ कर ढोल-ढप के साथ होली, रसिया, आल्हा, ढोला और रागिनी गाते-गाते अपना स्वस्थ मनोरंजन कर लेते हैं। इन सभी लोक गीतों में यदि कोई छन्द न होता या गेयता न होती तो ग्रामीण अंचल के लोग रसज्ञता से नहीं जुड़ पाते। आज भी गांवों में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस भाव और चाव से महाकवि तुलसी के मानस का पाठ किया जाता है उतने ही उत्साह और ओज के साथ आल्हा को भी गाकर लोगों को वीरगाथा काल की याद करते देखा जा सकता है। मेरा विश्वास है यदि कविता में गेयता न होती तो उसमें रसात्मकता नहीं होती, यदि रसात्मकता न होती तो कविता संगीत से नहीं जुड़ती और यदि गीत एवं संगीत न होता तो जीवन का आनन्द ही समाप्त हो जाता। वीणा के स्वरों में लय और माधुर्य है तभी तो मृग उसकी ध्वनि सुनकर जंगल से दौड़े चले आते हैं, सपेरे की बीन में लय और माधुर्य है तभी तो सर्प उसको सुनकर नाच उठता है। जब पशु-पक्षी, जीव-जन्तु भी स्वर लहरी का आनन्द लेते हैं तो फिर मनुष्य उस कविता के रस में रसमग्न क्यों न हो जो रस, छन्दवद्ध कविता से जन्मा है और जो प्राणिमात्र के जीवन का आनन्द है।

लेकिन कविता मात्र मनोरंजन की वस्तु ही नहीं वल्कि कवियों की कविताओं ने समय-समय पर राष्ट्र चेतना के स्वरों को भी उद्घोषित किया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् कविता में कुछ बदलाव सा आया और लगा जैसे स्वतन्त्रता के साथ-साथ कविता में निरंकुशता आ गई हो। इसे कविता, अकविता, नई कविता, क्षणिकाएं एवं हाईकू आदि-आदि नामों से पुकारा जाने लगा। लेकिन इस निरंकुश धारा में भी छन्द वद्ध कविता अपने अस्तित्व को जीवित रखे हुए है, वह इसलिए कि यह युगों-युगों से जन-मानस के जीवन से जुड़ी हुई वह स्वर लहरी है जिसमें पाठक या श्रोता रस मग्न होकर कुछ क्षणों को जी लेता है।

"प्रियदर्शिनी" खण्डकाव्य की रचयिता श्रीमती पद्मा शर्मा ने भी छन्दवद्ध कविता को ही अपनी रचनाओं में महत्व दिया और इस परम्परा का निर्वाहन सफलतापूर्वक किया भी है। मैं उन्हें लगभग दो दशक से जानता हूं। अनेक कवि गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों और आकाशवाणी पर मैंने उन्हें सुना है। वह एक राष्ट्रीय धारा की कवयित्री हैं। उन्होंने जितना भी लिखा है वह सब देश भक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। उनकी कविता में देश दिखाई देता है और देश उनकी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता बन गया है। भारतीय संस्कृति-सभ्यता और राष्ट्रीय चरित्र ही उनकी कविता का विषय रहा है। उनका परिवार राष्ट्रीय भावनाओं से सदैव जुड़ा रहा, इसीलिए पद्मा जी की रचनाओं में उन संस्कारों की छाप है। उन्होंने अपने आत्म निवेदन में इस तथ्य को स्वीकारा भी है—

"१९२१ के स्वतन्त्रता आन्दोलन में मेरे पूज्य पिता श्री स्व० राधाकृष्ण जी, पं० मोती लाल नेहरू तथा राजर्षि टंडन, मौलाना आजाद आदि स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ पूरे एक वर्ष तक जेल में रहे थे। श्रीमती इन्दिरा जी की दादी ने मेरी माता से वचन लिया था कि जब देश स्वतन्त्र हो जांय और यदि मैं न रहूँ तो तुम जवाहर के माथे पर तिलक अवश्य लगा देना। जब देश स्वतन्त्र हुआ तो सन् १९४७ में यह पुनीत कार्य अपनी माँ की ओर से मुझे करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

पद्मा जी के इस कथन से सिद्ध होता है कि इनके जीवन में राष्ट्रीयता इनके पैत्रिक संस्कारों से विरासत में मिली है। और वही भावनायें इनकी कविता में प्रस्फुटित होकर अजस्र धारा के रूप में बह उठी हैं। लेखिका ने अपना जीवन परिचय देते हुए एक रचना में निम्न भाव व्यक्त किये हैं—

मेरा परिचय इतना है, मैं भारत की तस्वीर हूं।
मातृभूमि पर मिटने वाले, मतवालों की पीर हूं।

उन वीरों की दुहिता हूँ जो,
हँस-हँस झूला झूल गये।
उन शेरों की माता हूँ जो,
रण भूमि में जूझ गये।
मैं 'जीजा' की अमर सहेली,
पन्ना की प्रतिछाया हूँ।
हाड़ी की हूँ अमर निशानी,
मैं जसवंत की माया हूँ॥

'कृष्णा' के कुल की मर्यादा 'लक्ष्मी' की शमशीर हूँ,
मेरा परिचय इतना है, मैं भारत की तस्वीर हूँ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही नहीं, पद्मा जी के जीवन में जब देश के नन्हे-नन्हे दीपों के हृदय में ज्योति जगाने और युवा वर्ग में क्रांति की ज्वाला का शंखनाद फूंकने की लालसा जगी तो उन्होंने अपनी रचनाओं को मंचों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का सपना संजोया—

आज मुझे दो मंच क्योंकि मैं, मंत्र फूंकने निकली हूँ।
जन-जीवन में जागृति का मैं, शंख फूंकने निकली हूँ ।।

श्रीमती पद्मा शर्मा को अपने राष्ट्र और अपनी राष्ट्र भाषा पर गर्व है। उनकी रचनाओं से भी यह उद्भाषित होता है कि वे इन के लिए समर्पित हैं। उन्होंने 'पद्मदीप' काव्य-संग्रह में अपनी भावना व्यक्त करते हुए जो गीत लिखा है मैं उसके प्रति लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ इसीलिए उस रचना के कुछ अंश यहां उद्धृत कर रहा हूँ जिससे सुधी पाठकों को लेखिका के मन में बैठे वास्तविक कवि का पता चल सके जिसने भारत की माटी के कण कण में सम्पूर्णता के दर्शन किये हैं—

"भारत मेरी मातृभूमि है भाषा मेरी भारती,
श्वांस-श्वांस करता अभिनन्दन सदा उतारें आरती।
ये मेरे भारत की धरती, जय मेरे भारत की धरती,
गीता के गौरव की धरती, सीता के सौरभ की धरती,
गुनियों के गौहर की धरती, सतियों के जौहर की धरती।
ये मान सरोवर की धरती, ये गौरी शंकर की धरती,
कस्तूरी कंचन की धरती, ये कुंकुम केसर की धरती।
ये वीर जवाहर की धरती, ये लालबहादुर की धरती,
पंजाबी केहर की धरती, बंगाली नाहर की धरती।
गंगा के पानी की धरती, झाँसी की रानी की धरती,
गौतम से ज्ञानी की धरती, राणा से मानी की धरती।
गऊओं गोपालों की धरती, भूमि भोपालों की धरती,
माता के लालों की धरती, दुश्मन के कालों की धरती।

राष्ट्रीय एकता में विश्वास रखने वाली कवयित्री की ये पंक्तियाँ समूचे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बँधे रहने का प्रमाण प्रस्तुत करती हुई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक समृद्ध और सशक्त राष्ट्र के दर्शन अपनी रचना से इस प्रकार कराती हैं :—

"मन्दिर मीनारों की धरती, गिरजा गुरुद्वारों की धरती
एलोर अजन्ता की धरती, टैगौर कबीरा की धरती"

× × ×

'जो इस पर आँख उठायेगा वह मिट्टी में मिल जायेगा
ये वेद पुराणों की धरती, ये धीर किसानों की धरती
अर्जुन के वाणों की धरती, ये वीरजवानों की धरती।'

उक्त रचना के अंशों से लगता है कि लेखिका भारत की माटी के कण-कण में लोट-लोटकर जन्म जन्म के पुण्य प्राप्त कर लेना चाहती है। उसकी सम्पूर्ण रचनाएँ राष्ट्रीयधारा की द्योतक हैं और वह धारा अजस्र है अपरिमित है।

पद्माजी की करनी और कथनी में भी कोई अन्तर नहीं दीखता। उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह सब वास्तविकता है। उन्होंने अपने प्रिय बेटे सुबोध कुमार मेजर को सेना में भेजकर एक वीर माता का ही उदाहरण प्रस्तुत किया है। पाकिस्तान से जब युद्ध हो रहा था तब पद्माजी ने अपने हाथ से स्वयं बेटे को तिलक लगाकर युद्ध के लिए विदा किया था। उस समय इस राष्ट्र-भक्त वीर माँ ने अपने बेटे को निम्न पंक्तियां पढ़कर विदा दी थी—

'चलो वीर बढ़ चलो वीर मैं करूँ तुम्हारी आरती
बढ़ो सपूतों प्रलयंकर बन माता तुम्हें पुकारती,
तुम गंगा के बेटे हो पर खेलो अब अंगारों से
संकट की वेला आये तो भिड़ जाना खूंख्वारों से।'

इतना ही नहीं, वे सभी सीमा के प्रहरियों को भी एक उद्बोधन स्वर दे उठती हैं—

'वीरों अब सौगन्ध तुम्हें है अपनी माँ के दूध की
राखी के कोमल तारों की मांगों के सिन्दूर की।
आज देश के लिए जवानो तन-मन-धन अर्पित करदो
माया ममता मोह त्याग निज जननी को गर्वित करदो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मा जी के मन में देश और समाज की बुराइयों से जूझने का भी अदम्य साहस दिखाई देता है।

'हम कुछ ऐसा काम करेंगे देश का ऊंचा नाम करेंगे,
तोड़ रूढ़ियों के बंधन को, नवयुग का निर्माण करेंगे,
उद्यम का शंकर पूजेंगे, मर्यादा की रामायण
कर्तव्यों की गीता कर में, कर्मठता का पारायण।'

जहां तक नारी की दुर्दशा की बात है, नारी हृदय होने के नाते पद्मा जी ने इस सत्य को बहुत नजदीक से देखा है। लगता है कि उनका हृदय मर्मव्यथा से भर उठा है और उस पीड़ा को व्यक्त करती हुई वे लिखती हैं—

'क्या उनकी गिनती हो सकती जो तिल-तिल मिटकर जीती हैं,
अधरों पर मृदु मुस्कान किन्तु अन्तर के आंसू पीती हैं।'

लेखिका के मन में जहाँ एक ओर नारी की मर्म व्यथा है वहीं वह उनके उत्थान के लिए सब कुछ करना भी चाहती है और वह यह भी मानती है कि नारी स्वयं एक शक्ति है. वह स्वयं एक निर्माता है, इसीलिए उनकी इस महान क्षमता को भी स्मरण कराती है—

"देश-जाति, मर्यादा का उत्थान तुम्हीं को करना है,
संतानों में नैतिकता का ज्ञान तुम्हीं को भरना है,
भारत माता का फिर से, अभिषेक तुम्हीं को करना है,
तुमको अपने भारत का प्रतिमान बनाये रखना है।

समाज के बदलते हुए मान दंडों ने अर्थ का अनर्थ ही कर दिया है, उससे दुखी होकर लेखिका का मन चीत्कार कर उठता है और वह समाज एवं व्यवस्था पर एक करारा व्यंग कर उठती है :—

'अर्थ ही माता, अर्थ पिता है, नेह-प्रीति का, अर्थ मिटा है,
प्यार, अर्थ के हाथ बिका है, ममता का भी अर्थ चुका है,
तन का अर्थ, भूख बीमारी, मन का अर्थ, दुःख लाचारी,
जन का अर्थ, आज बेकारी, धन का अर्थ, चोर बाजारी,

निर्धनता, समाज के लिए एक अभिशाप है, समाज में उसका एक नग्न चित्र प्रस्तुत करती हुए पद्मा जी यथार्थ का बोध कराती हैं—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ बिना लाली मिट जाती, अर्थ बिना वाणी घुट जाती।
अर्थ बिना डोली रुक जाती, अर्थ बिना अर्थी उठ जाती ।।

श्रीमती पद्मा जी कलमकार, शिल्पकार और चित्रकार को सृष्टा के रूप में ही मानती हैं। उनको अपने कर्तव्यों से च्युत होते देखना उन्हें स्वीकार नहीं है, वह उन्हें धिक्कारती भी हैं और उन्हें उनके कर्तव्यों के प्रति सजग भी करती हैं :—

समय चुनौती मांग रहा है, इस युग के हर होनहार से,
शिल्पकार से, चित्रकार से, शब्दकार से, गीतकार से।

लेखिका का विश्वास है कि जब तक हम श्रम में आस्था नहीं लायेंगे और शान्ति के वातावरण को जन्म नहीं देंगे तब तक भारत माँ के आँसू नहीं पोंछे जा सकते।

'जब तक धरती भरी हुई जर्जर भूखे कंकालों से,
जब तक चण्डी रक्त मांगती है माता के लालों से,
तब तक आँसू पौंछ नहीं सकते हम माँ के गालों से।'

× × ×

जिन्हें अपने पर भरोसा होता है, जो पुरुषार्थी हैं और जो अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित हैं उन्हीं का सम्मान होता है, पद्माजी ने इस सत्य को व्यक्त करते हुए लिखा है—

'जिस दीपक की ज्योति जली है आँधी और बवंडर में,
जिस मांझी की नाव चली है झंझा बीच समन्दर में,
जिस साधक की देह गली है श्रम के पूजा अर्चन में,
जिस योगी का रक्त बहा है धरती माँ के तर्पण में,
अब अभिषेक उसी का होगा जो लथपथ हो श्रम-कण में।'

श्रीमती पद्माजी के काव्य संग्रह 'पद्मदीप' की कुछ पंक्तियां मैंने यहाँ उद्धृत कर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालकर पाठकों को उनसे और उनकी भावनाओं से ही परिचय कराया है। इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर लेखिका ने 'प्रियदर्शिनी' खण्ड-काव्य लिखने का संकल्प लिया। अब तक इनके दो काव्य संग्रह प्रकाश में आये हैं 'समर्पण' और 'पद्मदीप'। अब यह तीसरा खण्ड-काव्य 'प्रियदर्शिनी'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके समक्ष है, इसमें वे कहां तक सफल हो पायीं यह तो सुधी पाठक एवं विद्वान समीक्षक ही मूल्यांकन कर पायेंगे। मैं तो इतना भर कह सकता हूं कि 'प्रियदर्शिनी' (खण्ड-काव्य) एक प्रकार से भारत माँ के प्रति समर्पण ही है। इन्दिरा जी ने अपने त्याग और बलिदान से भारत माँ को जो गौरव प्रदान किया उसके प्रति लेखिका का यह काव्य कृतज्ञता ज्ञापन के रूप में ही है। इन्दिराजी भारत की प्रधानमंत्री ही नहीं विश्व की महान नेता थीं, वे एक आदर्श नारी के रूप में भारतीय संस्कृति का रूप थीं। लेखिका ने उनके जीवन में सम्पूर्ण भारत के दर्शन किये हैं। यदि ये कहा जाय कि भारत का दूसरा नाम 'इन्दिरा' है तो उपयुक्त ही होगा। प्रियदर्शिनी के प्रति स्वयं लेखिका ने अपने कोटि कोटि समर्पण देते हुए लिखा है—

"भारती की लाडली तुम मातृ मस्तक का तिलक,
ओजमय वाणी तुम्हारी, वीर सुन उठते पुलक।
कोटि कंठों में स्वरों में, एक ही झंकार है,
इन्डिया की 'इन्दिरा', माँ शक्ति की अवतार है॥"

'प्रियदर्शिनी खण्ड काव्य की रचयिता श्रीमती पद्मा शर्मा 'साधिका' ने इस खण्ड-काव्य का नायक इन्दिरा जैसी महान नारी को चुनकर निश्चय ही उनके त्याग और बलिदान के प्रति कोटि-कोटि नमन दिये हैं। ओज के कवि श्री रामगोपाल वार्ष्णेय के शब्दों में ऐसी बलिदानी आत्माओं को निम्नलिखित शब्दों में ही नमन दिया जाता रहा है—

"नमन है उन शहीदों को जिन्होंने सिर कटाये हैं,
नमन रण वांकुरों को देश के जो काम आये हैं।
कहानी दे गये इतिहास को, बलिदान हैं जिनके,
कलम ने उन शहीदों के सदा से गीत गाये हैं॥"

अन्त में, मैं इस विश्वास के साथ अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ कि यह 'प्रियदर्शिनी खण्ड-काव्य' जन जन के हृदय का काव्य बनकर देश की भावी पीढ़ी को बलि और बलिदान की प्रेरणा प्रदान करता रहेगा और कवियों की लेखनी, इस काव्य की लेखिका श्रीमती पद्मा 'साधिका' की भांति देश के अमर शहीदों का गुणगान करती रहेगी। ●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशीष

मैं श्रीमती पद्मा जी को वहुत पहले से नहीं जानता था। श्री राकेश जी के माध्यम से उनसे परिचय हुआ और मैंने उनको जव-जव मंच पर कविता पाठ करते सुना तो उनकी कवित्व शक्ति और कविता के वाचन को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उनकी रग-रग में देश प्रेम की अजस्र धारा वहती है, जो उनकी कविता में फूट निकली। जव वे आत्मविभोर होकर कविता पाठ करती हैं, तो मंत्र मुग्ध सा श्रोता अनायास उनके साथ वह जाता है। ऐसी कवयित्री ने अपने काव्य की नायिका ऐसी विश्व विश्रुत महिला को चुना, जो नारि जाति को सदा-सदा के लिये वहुत ऊँचा स्थान दिला गई। निश्चय ही पद्मा जी अपने इस प्रयास में सफल हुई हैं। मेरी उन्हें शुभ कामना।

ताराचन्द्र हारीत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रादुर्भाव

भारत माँ के कण्ठहार में,
जड़े हुए हैं, रत्न अनेक।
उनके जैसी कहीं न मिलती,
अखिल-विश्व में उपमा एक।

वीर–प्रसूता भारत–माता,
है अभिनव-रत्नों की खान।
ऐसे अनुपम रत्न दिये हैं,
हुआ कि जिनसे देश महान।

उसी शृंखला में आकाशी,
ज्योति-किरण प्रस्फुटित हुई।
'देश-रत्न' बन करके इन्दिरा,
धरती पर अवतरित हुई।

शती–बीसवीं ने भारत को,
ऐसा कौस्तुभ–रत्न दिया।
हर्षित होकर भारत माँ ने,
जिसको अपने अंक लिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल भारत नहीं, विश्व के,
मानस पर उत्कीर्ण हुई।
स्वयं-श्रेष्ठता देह धार कर,
भूतल पर अवतीर्ण हुई।

चमत्कार सी भू पर आई,
चमत्कार सी चली गई।
नमस्कार है उस दिव्या को,
अनायास जो चली गई।

भारत की नारी की गरिमा
को करते हम कोटि प्रणाम।
उसकी महिमा को नत-मस्तक
हैं जिसके उत्कर्ष महान।

उस दिव्या की दिव्य ज्योति से,
ज्योतिर्मय था भू-मण्डल।
उस वीरा से ही था उज्ज्वल,
भारत माँ का मुख-मण्डल।

महा-शक्ति के इस उद्भव को,
भारत भूल न पाएगा।
युगों-युगों तक उस गरिमा को,
अपना शीश झुकाएगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप-तेज-वल कोमलता का,
वह तो अद्भुत मिश्रण थी।
शतदल सा सौन्दर्य अनूठा,
विधि का भव्य परीक्षण थी।

कौन जानता था यह कलिका,
इतनी गन्ध उड़ाएगी।
अपने सुरभित-परिमल से यह,
जगती को भर जाएगी।

पुण्य-घड़ी नक्षत्र-प्रवल हो,
जब आपस में मिलते हैं।
तभी किसी दैवी-कृति की वे,
स्वयं सर्जना करते हैं।

अति-मानव बन कर फिर कोई,
इस भूतल पर आता है।
अपनी गुणवन्ता के कारण,
वह महान बन जाता है।

होनहार तो शैशव से ही,
निज-प्रतिभा दिखलाते हैं।
जीवित रहते सुस्मृतियों में,
कुछ ऐसा कर जाते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्तन-मनन कथन सब उनका,
देश-हेतु ही होता है।
जन्म-मरण, जीवन ही उनका,
राष्ट्र-समर्पित होता है।

नाम-जाति या धर्म नहीं कुछ,
स्वयं-श्रेष्ठता पुजती है।
महिमा-मय मानव के आगे,
सारी जगती झुकती है।

पूर्व जन्म के संचित-गुण भी,
निज-प्रभाव दिखलाते हैं।
जन-साधारण से ऊपर उठ,
वे विशिष्ट बन जाते हैं।

मात-पिता के सत्कर्मों को,
सन्तति सदा भुनाती है।
उनके ही अनुरूप चले तो,
गौरव-गरिमा पाती है।

कर्म-अलौकिक, कृत्य-अलौकिक,
रूप-अलौकिक, होता है।
इह लौकिक होकर भी उनका,
तेज-अलौकिक होता है।

ये विभूतियाँ तो वसुधा पर,
सदियों में ही आती हैं।
पूर्ण-प्रभासित होकर वे फिर,
अनायास बुझ जाती हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म और शैशव

एक तपस्वी के तप का ही,
श्री नेहरू जी थे वरदान।
समाधिस्थ होकर माता को,
दिया जिन्होंने सुत का दान।

तप:पूत नेहरू जी ने फिर,
निज-कुल का विस्तार किया।
क्रान्ति-रूप इन्दिरा ने ग्राकर,
उस गृह में ग्रवतार लिया।

भारत मां की राजदुलारी,
वह भारत का गौरव थी।
प्रिय-दर्शिनी इन्दिरा सच ही,
भारत भू का सौरभ थी।

ग्रवला-नारी से सवला बन,
चमत्कार कर दिखलाया।
निज प्रतिभा के वल पर उसने,
भारत में गौरव पाया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप-तेज-सौन्दर्य सभी तो,
उसमें पुंजीभूत हुआ।
स्वयं इन्दु को रचकर विधना,
एक वार अभिभूत हुआ।

तेज सूर्य का, शौर्य शूर का,
शीतलता, हिमकर की थी।
सहन-शीलता, वसुन्धरा की,
कोमलता, किसलय की थी।

उन्निस सौ सतरह में जन्मी,
वह मोती की पोती थी।
बेटों से बढ़ कर जो निकली,
वह नेहरू की बेटी थी।

जन्म हुआ जब दादा बोले,
मत कहना यह बेटी है।
मेरी गोदी में आकर के,
स्वयं भवानी लेटी है।

शब्द, सत्य-साकार हो गए,
ऐसे करतब कर गुज़री।
स्वयं-शक्ति ही देह धार कर,
मानो भू पर थी उतरी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेहरू जी के वंश वृक्ष में,
कोमल-कलिका फूटी थी।
कमला के अंचल से प्रकटी,
कन्या एक अनूठी थी।

संगम के तट पर बिखरी थी,
बाल-सूर्य की अरुणाई।
इन्दु-रूप, धारण कर उतरी,
थी भूतल पर तरुणाई।

स्वर्ण-परी सी सुन्दर थी वह,
कोमल कान्त-कलेवर थी।
छुई-मुई सी संकोची वह,
निर्मल शान्त-सरोवर थी।

झांका करती कमल-नयन से,
एक अनूठी दीप्ति-महान।
अरुणिम-अधरों पर रहती थी,
उसके मन-मोहक मुस्कान।

उस सुन्दर गुड़िया ने तो था,
घर भर का मन मोह लिया।
नेहरू जी ने प्रिय पुत्री को,
प्रियदर्शिनी नाम दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुतलाती वाणी से अपनी,
सबको मोहित करती थी।
दादा-दादी-बूआ के संग,
नित नव-कौतुक करती थी।

बाल सुलभ क्रीड़ा से उसने
घर-आँगन गुंजार दिया।
निष्प्राणित जीवन में सबके,
प्राणों का संचार किया।

गुड्डे-गुड़ियों के संग रमना,
उसको कम ही भाता था।
लड़कों जैसे खेल खेलना,
उसको सदा सुहाता था।

टोपी-कुरता और पजामा,
जाकिट, पहना करती थी।
केश-वेष-भूषा सबही से,
लड़कों जैसी लगती थी।

बचपन से ही नेता बन कर,
दल-संचालन करती थी।
वानर-सेना, लेकर के वह,
सैन्य-संगठन करती थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वानर-दल तो उस हलचल में,
संवाहक बन जाता था।
शासन के दुर्गम-पहरे में,
संदेशा, पहुँचाता था।

होनहार थी शैशव से ही,
कौशल अपना दिखलाया।
राजनीति का प्रथम पाठ यों,
विधना ने था सिखलाया।

दादी माँ का संरक्षण था,
दादा जी का अनुशासन।
माँ से सीखा आत्म-नियंत्रण,
पूज्य पिता से, संचालन।

पराधीन था भारत अपना,
आन्दोलन की थी हलचल।
गहमा-गहमी नेताओं की,
देखा करती थी प्रतिपल।

दूर-दूर से देश भक्त सब,
उसके घर पर आते थे।
बाल-इन्दु पर सब ही अपना,
नेहाशीष लुटाते थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखी उसने अपने गृह में,
वस्त्रों की जलती होली।
सत्याग्रह के दीवानों की,
मिल-जुल कर सजती टोली।

भारत मां के जयकारों से,
गूंजा करता नभ-मण्डल।
अंग्रेजी अत्याचारों से,
जूझा करता सेवक-दल।

कहां राजसी-ठाठ निराले,
रेशम की वे पोशाकें।
कहां हाथ के कते सूत के,
धोती-कुर्ते अरु फ्राकें।

वस्त्र विदेशी खोज खोजकर,
दीप्त अनल में झोंक दिये।
बाल इन्दु ने भी सब अपने,
खेल खिलौने सौंप दिये।

इन्दु विचारी समझ न पाती,
था यह कैसा परिवर्तन।
कष्ट–अभाव–क्लेश–पीड़ा का,
होता दिन-दिन परिवर्धन।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादा-पिता जेल में वन्दी,
माता आती–जाती थी।
दादी–बूआ सारी बैठीं,
जाने क्या बतियाती थीं।

सहमी–सहमी एकाकी वह,
अपलक देखा करती थी।
मानो भाग्य-नियन्ता का वह,
अदृश–लेखा लखती थी।

कभी–कभी सरकारी प्यादे,
कुर्की ले आ जाते थे।
जो आनन्द भवन की कुछ भी,
वस्तु उठा ले जाते थे।

सारा ही परिवार समर्पित,
देखा माँ के चरणों में।
सौंप दिया था तन–मन जीवन,
सबने मां के चरणों में।

मां की मुक्ति हेतु ही सबने,
मिलकर शपथ उठाई थी।
स्वतन्त्रता के वरण हेतु ही,
अपनी जान लगाई थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्याग और उत्सर्ग देश-हित,
करने का नव मंत्र मिला।
बाल–इंदिरा को सहसा ही,
जीवन का अभिमंत्र मिला।

बालक वैसा ही बनता है,
जैसा वातावरण मिले।
प्रीति–नेह या राग–द्वेष का,
जैसा पर्यावरण मिले।

शैशव को विकसित होने को,
पहले मां का प्यार मिले।
कलियों को खिलने से पहले,
किरणों की मनुहार मिले।

किन्तु नहीं कुछ भी मिल पाया,
उस बाला को बचपन में।
माँ थी रुग्णा, पिता जेल में,
शैशव बीता उलझन में।

बाल-सुलभ क्रीड़ाएँ कैसी,
उसने कभी नहीं जानी।
लाड़-दुलार-प्यार की बातें,
रहीं सदा ही अनजानी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाल-इन्दु, माता से मिलने,
कारागृह में जाती थी।
जब-जब उसके वाल हृदय को,
माँ की याद सताती थी।

सहन-शीलता का जननी से,
वाल-इन्दु ने पाठ पढ़ा।
कमला ने अपनी पुत्री को,
प्रतिभा के अनुरूप गढ़ा।

देश प्रेम से पूरित अपने,
पूज्य-पिता को देखा था।
पति-अनुकरणी अपनी माँ का,
रूप हृदय में रोपा था।

ममता-मय माता का मन में,
अपने चित्र उतार लिया।
माँ की पीड़ा मैं बाँटूंगी,
उर में यही विचार किया।

दुर्बल माँ की विह्वलता को,
वह अन्तर से भुला न पाई।
अन्त-समय तक लड़ी मृत्यु से,
पर वह माँ को बचा न पाई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कली भला क्या विकसित होती,
जिस पर हुआ तुषारा-पात।
अल्प-आयु में बिछुड़ी माँ से,
कौन लगाता उसको गात।

दृढ़ता अरु निष्ठा का उसको,
माता से वरदान मिला।
सहन-शीलता के कारण ही,
इतना जग से मान मिला।

मातृ-शोक के दारुण-दुख को,
इन्दु सहज ही झेल गई।
उर की दृढ़ता के बल पर ही,
खेल जगत के खेल गई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षणकाल

शिक्षा-अर्जन हेतु गई वह,
फिर जिस भी संस्थान में।
तन विदेश में रहा भले ही,
मन था हिन्दुस्तान में।

कारागृह से नेहरू जी के,
पत्र सदा ही आते थे।
जिनके द्वारा वे पुत्री को,
मानवता सिखलाते थे।

बहु-आयामी शिक्षा ने था,
उसका रूप सँवार दिया।
जिसके बल पर उस देवी ने,
मन से देशोद्धार किया।

भारत की संस्कृति की इन्दिरा,
अन्तर्मन से पोषक थी।
भारतीय–महिमा गरिमा की,
रक्षक थी, उद्घोषक थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललित-कलाएँ उसके उर को,
सदा प्रफुल्लित करती थीं।
उत्तम-कृतियों के प्रति वह तो,
स्वयं समर्पित रहती थी।

नृत्य–गीत–साहित्य सभी के,
हित उसने सहयोग दिया।
शान्ति–निकेतन की शिक्षा का,
था समुचित उपयोग किया।

वन-उपवन की शोभा उसको,
सदा निमंत्रित करती थी।
शृंङ्ग-तुङ्ग पर चढ़ जाने को,
मानो प्रेरित करती थी।

बचपन का चंचलपन उसको,
नहीं कभी भी छू पाया।
जान न पाई कब द्वारे पर,
अनजाने यौवन आया।

मां की सेवा करने वाला,
श्रेष्ठ युवक उसको भाया।
हुई प्रभावित उसके गुण से,
जीवन संरक्षक पाया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय, परिणत हुआ प्रणय में,
किया पिता से आवेदन।
जात-पात के वन्धन तोड़े,
रोक न पाया अवरोधन।

वैचारिक दृढ़ता के सम्मुख,
बड़े-बड़े झुक जाते हैं।
संकल्पों की शक्ति प्रबल हो,
पंथ स्वयं बन जाते हैं।

आनन्दित 'आनन्द भवन' था,
बजी द्वार पर शहनाई।
नवल बधू का सौम्य रूप-
लख, स्वयं रमा भी सकुचाई।

वासन्ती खादी में शोभित,
उसका रूप अनूठा था।
आडम्बर से रिक्त अनोखा,
उत्सव भव्य, अनूठा था।

सहगामिनि बन कर फिरोज की,
इन्दु हृदय में हरषाई।
नव-दम्पति को आशिष देकर,
आँख पिता की भर आई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैवाहिक जीवन इन्दिरा का,
उलझन से प्रारम्भ हुआ।
जीवन के उस उदय काल का,
गहन-तिमिर में अन्त हुआ।

छटे मास ही वन्दी वन कर,
कारागृह में वह आई।
सर्व-सुखों का मोह छोड़ कर,
त्याग तपस्या अपनाई।

महा-शक्ति जो देश-हेतु थी,
कभी न घर में रह पाई।
अपने उर की व्यथा-कथा वह,
नहीं किसी से कह पाई।

आना-जाना कारागृह का,
फिर तो दैनिक कर्म बना।
सुख-सेजों पर सोना कैसा,
कष्ट वहन ही धर्म बना।

दो पुत्रों की जननी वन कर,
माँ की ममता धन्य हुई।
संजय अरु राजीव रत्न द्वय,
पाकर इन्दिरा मग्न हुई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्री, माता, पत्नी, गृहिणी—
का कर्तव्य निभाती थी।
कार्याधिक्य भले हो कितना,
तनिक नहीं घबराती थी।

दीन-दुखी का कष्ट देख वह,
द्रवित सदा ही होती थी।
जब तक उनकी व्यथा न हर ले,
नहीं चैन से सोती थी।

साथ पिता के घर अरु बाहर,
लगी रही वह छाया सी।
घोर परिश्रम करती थी वह,
यद्यपि कोमल काया थी।

सबके दुख को अपना माना,
अपना दुःख, नहीं था जाना।
असहायों दलितों की पीड़ा
का कारण उसने था जाना।

भूख-प्यास आराम छोड़ कर,
उसने केवल काम किया।
नहीं कभी वह बैठी थक कर,
नहीं कभी विश्राम किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेज-ओज धीरज क्षमता का,
ऐसा अद्भुत मिश्रण थो।
नहीं भूलती सहज किसी को,
उसकी याद विलक्षण थी।

सहसा पति के दुखद निधन ने,
अन्तर को झकझोर दिया।
वज्रपात ने इन्दिरा जी के,
तन-मन को था तोड़ दिया।

मिली सूचना सुन कर दौड़ी,
किन्तु न कुछ भी कर पाई।
क्रूर नियति के आगे उसकी,
पार न कुछ भी वस पाई।

रहा हाथ में हाथ प्रिया का,
पर प्रियतम कर कूच गया।
प्रियदर्शिनी से असमय ही,
भाग्य विधाता रूठ गया।

जीवन की नैया का मांझी,
स्वयं धार में डूब गया।
छूट गई पतवार करों से,
और किनारा टूट गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि दुर्गम पथ जीवन का,
पर चलने की चाह प्रवल।
जीना है अनिवार्य यहां पर,
उर हो अन्तर्दाह प्रवल।

घिरा अँधेरा था जीवन में,
घोर दुखों ने घेरा था।
नहीं सूझता गहन तिमिर में,
कितनी दूर सवेरा था।

अब जीवन के दुर्गम पथ पर,
एकाकी चलना होगा।
कर्तव्यों के हवन-कुण्ड में,
तिल-तिल कर जलना होगा।

मरणान्तक पीड़ा ने उसके,
अन्तर्मन को हिला दिया।
किन्तु इन्दु ने कर्म क्षेत्र में,
था अपने को घुला दिया।

कर्तव्यों को मान चुनौती,
सब दुख अपना भुला दिया।
अपने अन्तर की पीड़ा को,
थपकी देकर सुला दिया।

झंझाओं में घिर जाने पर
भी जो धीरज धरते हैं।
वे ही मानव निज साहस से,
जीवन सागर तरते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षण काल

तीव्र ताप में दह कर ही तो,
सोना, कुन्दन वनता है।
विष-व्यालों के मध्य विचर कर,
मानव चन्दन वनता है।

वनी व्यस्तता परम सहेली,
कर्मठता का वरण किया।
पूर्ण समर्पित हो भारत के,
प्रगति-पंथ पर चरण दिया।

नेहरू जी के सपनों के
अनुरूप स्वयं को ढाला था।
नहीं तनिक आभास उसे था,
कल क्या होने वाला था।

तूफानों में अविचल रह कर,
वनी रही वह पाषाणी।
संघर्षों से रही जूझती,
थी वह अद्भुत सेनानी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने दुख पर रोने की तो,
उसे न फुरसत मिल पाई।
पर दुख को हाला पीकर ही,
वह आजीवन मुसकाई।

सन् उन्निस सौ सैंतालिस में,
माँ की बेड़ी जब टूटी।
भारत का जन-मन हर्षाया,
किरण आस की थी फूटी।

अंगरेज़ों ने जाते जाते,
बीज फूट के बोए थे।
पाकिस्तानी निर्णय पर तो,
राष्ट्रपिता भी रोए थे।

भारत की धरती पर फिर तो,
भीषण नर संहार हुआ।
मानव पर मानव के द्वारा,
बर्बर अत्याचार हुआ।

लाखों आहत अरु विस्थापित,
मारे मारे फिरते थे।
प्रिय परिवार-जनों को खो, वे
भीषण क्रन्दन करते थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत भर में प्रतिहिंसा की,
वह निर्मम ज्वाला धधकी।
क्षत-विक्षत लख माँ की मूरत,
आँखों से गंगा वरसी।

ऐसे कुसमय में सेवा हित,
इन्दिरा आगे आई थी।
आहत-पीड़ित-त्रस्त जनों की,
उस ने जान वचाई थी।

भोजन-वस्त्र आदि लेकर वह,
जन की पीड़ा हरती थी।
नेहरू जी की वेटी, अपने
हाथों से सव करती थी।

शिविरों में जा दुखड़े सुन,
वह सवको धीरज देती थी।
यथा-शक्ति दिन-रात-निरन्तर,
भरसक-सेवा करतो थी।

स्वतंत्रता पाकर भारत का,
जन गन मन फिर हरषाया।
लाल किले पर, नेहरू जी ने,
अमर-तिरंगा फहराया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के उज्ज्वल-आगत का,
उन नयनों में सपना था।
भारत के जन-जन का दुखड़ा,
नेहरू जी का अपना था।

नए-नए निर्माण हुए फिर;
नए-राष्ट्र की नींव पड़ी।
नव-उद्योगों की भारत में,
नई-शृङ्खला हुई खड़ी।

जुटे हुए थे वे तन मन से,
भारत के उत्थान में।
तभी आक्रमण किया चीन ने,
भोंका छुरा अंजान में।

हिन्दी-चीनी भाई कह कर,
काम शत्रु का कर डाला।
क्रूर-घात ने पंडित जी के,
अन्तर्मन को मथ डाला।

वे सदमे को झेल न पाए,
तन अरु मन से टूट गए।
एक रात वह सोते-सोते,
भव-बन्धन से छूट गए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ इन्दिरा ज़ी पर फिर से,
विधना का निर्मम आघात।
माँ अरु पति विछुड़े थे पहले
पूज्य-पिता का छूटा साथ।

पुनः अँधेरे ने घेरा था,
नहीं आस की रही किरण।
दो नन्हें-पुत्रों की माता,
कहाँ मिलेगा संरक्षण।

पिता तुल्य स्वजनों ने उसको,
धीरज तभी वंधाया था।
सौंप सूचना और प्रसारण,
मंत्री उसे बनाया था।

कातरता के दुर्बल-क्षण भी,
नहीं किसी के पांव पड़ी।
जीवन के हर संघर्षण में,
रही सदा निर्बाध खड़ी।

अल्पकाल को लाल वहादुर
भी, शासन में थे आये।
क्रूर-काल ने ग्रसा इन्हें भी,
स्वप्न न पूरे हो पाय।

सौंप दिया फिर सबने मिलकर,
भारत इन्दिरा गाँधी को।
अतुलित-साहस भरकर उर में,
चली रोकने आंधी को।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मठता

वह कांटों का ताज पहनकर,
डरी न किंचित घबराई।
दृढ़-निश्चय ले डटी रही वह,
जब तक अन्त-घड़ी आई।

बाल्यकाल से ही तो उसने,
संघर्षों को झेला था।
आँधी-तूफ़ानों को अपनी,
आत्म-शक्ति से ठेला था।

नहीं शिथिलता उन्हें घेरती,
जिनके उर उत्सर्ग भरा।
सतत-साधना करने वालों
से रहता है काल डरा।

सुगम-पंथ पर चलना कैसा,
उस पर तो सब चलते हैं।
पर चलने का श्रेय उन्हीं को,
जो काँटों पर चलते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव-विचार-कर्म सबके ही,
मुख पर अंकित होते हैं।
सत्य-पंथ के अनुगामी के,
चरण न कम्पित होते हैं।

कर्तव्यों को मान चुनौती,
वह दृढ़ता को वर बैठी।
दैन्य, देश का दूर करूँगी,
यह प्रण मन में कर बैठी।

माँ की दृढ़ता, गर्व पिता का,
अद्भुत उसकी क्षमता थी।
अन्तर्मन में अविचल उसके,
भारत मां की ममता थी।

दूर-दृष्टि अरु साम्य-भाव से,
दिया देश को अनुशासन।
भेदभाव अरु द्वेषभाव का,
किया देश से निष्कासन।

साम–दाम या दंड-भेद जो
भी था, भारत–हित में था।
जीवन का प्रत्येक कर्म-फल
अर्पित, भारत हित में था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारम्भिक जीवन से उसने,
सही जगत की मनमानी।
इसीलिये हर दांव-पेंच से,
रही जूझती मरदानी।

किया फैसला स्वयं सदा ही,
नहीं किसी की भी मानी।
नहीं किसी पर किया भरोसा,
नीयत बद, जब पहचानी।

अपराजेय शक्ति थी ऐसी,
जिसे न प्राणों का था मोह।
कभी किसी के शठता करने
पर भी उसने किया न छोह।

शासन की गति-विधियां उससे,
रहीं न किंचित अनजानी।
राजनीति में कूटनीति की,
कीमत उसने पहचानी।

त्याग-भाव नारी का उसने,
व्यक्ति स्वयं को माना था।
कर्मयोग को शीश झुकाकर,
इष्ट, कर्म ही जाना था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक–सूत्र में बाँध दिया था,
भारत के बिखरे जन को।
एक दिशा दी कर्मठता से,
भारत के आहत-मन को।

नए-नए निर्माण कराए,
उद्योगों में जुटी रही।
अन्न–सैन्य के संवर्धन में,
वह दृढ़ता से डटी रही।

उसे सभी कुछ रुचिकर लगता,
जो भारत का अपना था।
रहे विश्व में भारत ऊपर,
यह ही उसका सपना था।

चिन्ता प्रतिपल रहती उसको,
मिटे सभी के मन का क्लेश।
मिटे गरीबी, हो खुशहाली,
उन्नत हो यह मेरा देश।

दिव्य-शक्ति थी जिसके कारण
भारत का यश मान बढ़ा
निज क्षमता से उस दिव्या ने
भारत का नव-रूप गढ़ा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण कुशलता से इन्दिरा ने,
भारत का उत्थान किया।
मनसा-वाचा और कर्मणा–
से था, जन-कल्याण किया।

जितना दुष्कर शैशव बीते,
उतना दृढ़-नर बनता है।
तूफानों के अभ्यासी से,
स्वयं–सिंधु भी डरता है।

उसने अपने कोमल उर को,
कर्मठता से बाँधा था।
राजनीति का, कूटनीति का,
गहरा दलदल लाँघा था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति रूपा

एक बार फिर वङ्ग देश हित,
हुआ धरा पर संघर्षण।
सबल-पड़ौसी के नाते ही,
दिया उसे था, संरक्षण।

डोल उठी धरणी हिंसा से,
कोई देश नहीं बोला।
पाकिस्तानी-बर्बरता पर,
नहीं किसी ने मुंह खोला।

सीमा का अतिरेक हुआ जब,
तभी स्वयं आगे आई।
प्रतिवेशी का रक्षण पाकर,
मानवता थी, हर्षाई।

चेत गई रणचण्डी बनकर,
शत्रु देखकर चकराया।
सहस्र-वर्ष तक लड़ने वाला,
चौदह दिन में घबराया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के वीरों के सम्मुख,
किया शत्रु ने आत्म-समर्पण।
हुआ नहीं था, कहीं धरा पर,
अब तक ऐसा युद्ध विलक्षण।

संरक्षण दे वंग देश को,
विजय माल पहनाई थी।
बंग-वासियों ने भारत की,
जय–जय कार बुलाई थी।

स्वयं–विजेता होकर भी फिर,
देश उन्हीं को सौंप दिया।
शरणागत को संरक्षण दे,
प्रस्तुत था आदर्श किया।

शान्ति–हेतु ही शान्तिप्रिया ने,
आजीवन था यत्न किया।
निज प्राणों की आहुति देकर,
शान्ति–यज्ञ सम्पन्न किया।

युद्ध-काल में सीमा पर जा,
सबको जोश दिलाया था।
वीर-जवानों का अभिनन्दन,
करके मान बढ़ाया था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीति-विदेशी उत्तम उसकी,
काम समय पर आई थी।
मित्र—रूस ने हाथ वढ़ाकर,
अपनी आन निभाई थी।

वना प्रशंसक सारा ही जग,
उसकी कार्य-कुशलता का।
किन्तु श्रेय देती थी जन को,
अपनी भव्य सफलता का।

थकना उसने कभी न जाना,
घोर परिश्रम करती थी।
शान्तिकाल हो, युद्ध काल हो,
कर्म निरन्तर करती थी।

नहीं कभी विचलित होती थी,
घातों से प्रतिघातों से।
ठोस—धरातल पर चलती थी,
नहीं रीझती बातों से।

पूज्य-पिता के उपदेशों को,
था उसने कंठस्थ किया।
श्रम का अर्चन करते रहने,
का उसने संकल्प लिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात–पिता–पति–पुत्र सभी तो,
थे जननी पर वार दिये।
भारत माँ के श्री चरणों में,
अपने प्राण निसार किये।

घोर विरोधाभासों में भी,
अडिग–अचंचल खड़ी रही।
स्वयं–शक्ति बन कर अरि दल में,
पाषाणी सी अड़ी रही।

वह तो ऐसी मर्दानी थी,
नहीं कभी भयभीत हुई।
उच्च-मनोवल के कारण ही,
हार-हार कर जीत गई।

क्रूर–कुचालों ने मिल करके,
कितने जाल बिछाए थे।
उन्नत–शीश झुकाने के हित,
ही आयोग बिठाए थे।

बाल न बाँका कर पाए वे,
उस नारी मरदानी का।
दुहराया इतिहास पुराना,
था झांसी की रानी का।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप-मयी थी, तेजमयी थी,
ओज-मयी थी रुद्राणी।
शक्ति, स्वयं साकार इन्दिरा,
थी वह सचमुच क्षत्राणी।

वह ऐसी निर्भीक नारि थी,
कभी न किंचित भय माना।
बड़े-बड़े झंझावातों में,
सीखा बढ़ते ही जाना।

फूलों जैसी कोमल काया,
वज्र समान हृदय पाया।
संघर्षों अरु आघातों से,
नहीं कभी जो घबराया।

उसकी दृढ़ता के कारण फिर,
सबने मुंह की खाई थी।
अपना उन्नत शीश उठा वह,
फिर सत्ता में आई थी।

संघर्षों की तीव्र अनल में,
तप-तप उसके प्राण खिले।
अंगारों पर चलने पर ही,
सारे जग से मान मिले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशल नेतृत्व

जिनके उर निष्ठा से पूरित,
शीश न उनके झुकते हैं।
प्रगति-पंथ पर बढ़ने वाले,
पाँव न पीछे मुड़ते हैं।

चाहे जितना दुर्गम पथ हो,
चाहे जैसा झंझावात।
दृढ़-निश्चय से हार मानता,
स्वयं क्रूरता का उत्पात।

विजय, वरण करती है उनका,
जिनके उर उत्सर्ग भरा।
देह भले ही कुम्हला जाए,
साहस रहता सदा हरा।

कार्य कुशलता दृढ़ता उसकी,
दिन-दिन मँजती चली गई।
असि-धारों पर निर्भयता से,
दृढ़ पग धरती चली गई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख-देख थे सभी अचंभित,
अद्भुत थी उसकी करनी।
केवल भारत नहीं, विश्व भी,
इन्दिरा थी सबकी अपनी।

उसने भारत की महिमा को,
द्विगुणित ही हर चन्द किया।
कटुताओं से, शठताओं से,
संघर्ष सदा निर्द्वन्द्व किया।

स्वर्णाक्षर में अंकित होंगे,
ऐसे अभिनव काम किये।
तन मन धन जीवन सब उसने,
भारत माँ के नाम किये।

भारत का पर्याय इन्दिरा,
कर्मठता की बोधक थी।
शर-शय्या पर सोने वाली,
परम्परा की द्योतक थी।

धर्म-प्रेम-ममता का सङ्गम;
ज्ञान-कला का मिश्रण थी।
कर्मयोग की साधक थी वह,
उसकी ज्योति विलक्षण थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समता-ममता और एकता
का उसने शुचि-मंत्र दिया।
नील-कठ वन करके उसने,
विष को अपने कण्ठ लिया।

पुत्र निधन की दुर्घटना में,
नहीं तनिक वे घवराईं।
दुख-सुख को समभाव ग्रहण
कर, गति गीता की अपनाई।

पितृ-शोक को जैसे उसने,
धीरज के सँग वहन किया।
उसी भाँति स्थिर रह करके,
पुत्र-शोक भी सहन किया।

दीप-शिखा सी जली निरन्तर,
जल, जग को आलोक दिया।
उसने अपनी रक्ताँजलि से,
धरती का अभिषेक किया।

लिप्त जगत में रहते हैं जो,
कष्ट उन्हीं को होता है।
किन्तु कमल-वत जोने वाला,
तो विरला ही होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भी माँ थी, नहीं पुत्र की-
मृत्यु देख कर, थी रोई।
विह्वल होकर गिरी न उसने,
अपनी दृढ़ता ही खोई।

अविचल रह कर देखा उसने,
स्वयं नियति के खेलों को।
पाषाणी बनकर झेला था,
जग के सभी झमेलों को।

कर्मयोग की शिक्षा का,
उसने समुचित उपयोग किया।
किसी तपस्वी ने था मानो,
मनोयोग से योग किया।

शासन सत्ता पद पाकर भी,
नहीं दंभ से फूली थी।
गांधी-नेहरू की शिक्षा को,
नहीं एक क्षण भूली थी।

मानवता के हित जीतो थी,
मानवता की भेंट चढ़ी।
मानवता का मानक थी वह,
दानवता के हाथ पड़ी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति–धर्म अरु वाद सभी से,
ऊपर उठकर देखा था।
दूर दृष्टि से उसने अपनो,
लिखा देश का लेखा था।

कर्तव्यों की बलिवेदी पर,
अपनी जान लुटाई है।
इसीलिये वह देवी बन कर,
जन के मन पर छाई है।

घोर व्यस्त रहने पर भी वह,
सदा प्रफुल्लित रहती थी।
जन-परिजन सबकी सुविधा का,
वह तो चिन्तन करती थी।

अल्पाहारी अति मृदुभाषी,
करुणामय, वात्सल्यमयी।
कोई भी प्रतिवाद न ठहरा,
थी वह ऐसी तेजमयी।

सुरुचि-पूर्ण परिधान पहन
वह, जहां कहीं भी जाती थी।
स्वयं-भव्यता उसके आगे,
मानो बिछ-बिछ जाती थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्नयन

शब्दों में आकर्षण उसके,
वाणी में भी गरिमा थी।
आकर्षक व्यक्तित्व अनूठा,
मूर्त-सौम्यता, सुषमा थी।

ओजस्वी वाणी सुनने को,
सब लालायित रहते थे।
उस महिमामय महिला की तो,
सभी प्रशंसा करते थे।

एक झलक पाने को उसकी,
जन–सागर उमड़ा करता।
इन्दिरा जी का दर्शन करके,
जन–मन था हर्षित रहता।

नगर–ग्राम, जन–साधारण में,
जहां कहीं वह जाती थी।
सबकी–अपनी बन कर वह तो,
सबसे घुल–मिल जाती थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा और वेशभूषा अपनी
पर, गर्वित होती थी।
भारत की प्रत्येक वस्तु लख,
मन में हर्षित होती थी।

जननी–जन्म भूमि के प्रति ही,
जिसका उर अनुरक्त रहे।
स्वयं–समर्पित होता उस पर,
चाहे जितने कष्ट सहे।

त्यागमयी थी नेह मयी थी,
ओजमयी थी रुद्राणी।
गर्व करेगा भारत उस पर,
धन्य-धन्य थी इन्द्राणी।

दिखा गई वह क्षमता अपनी,
कार्य-कुशलता कर्मठता।
बड़े-बड़े दिग्गज हारे थे,
लख कर उसकी निर्भयता।

नयनों में आगत के सपने,
अन्तर में था दृढ़-विश्वास।
हर निर्णय से होता उसकी,
अविचल-निष्ठा का आभास।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन-जन की प्रतिनिधि बन कर-
वह आगे बढ़ती चली गई।
उन्नति के सोपानों पर वह,
ऊपर चढ़ती चली गई।

एशियाड का आयोजन कर,
अद्भुत क्षमता दिखलाई।
भारत के उज्ज्वल-गौरव की,
कीर्ति-पताका फहराई।

चकित सभी थे लख भारत के,
साहस-मय अभियान को।
भारत-माँ के प्रति जनता के,
श्रद्धामय सम्मान को।

भारत की संस्कृति की गरिमा,
देख-देख आनन्दित थे।
प्रेम-भाव सत्कार देख कर,
मन में सभी अचंभित थे।

कौन देश या प्रान्त-नगर था,
जहाँ, जहाँ वह नहीं गई।
मठ-मन्दिर-संस्थान कौनसा,
जिसको गरिमा नहीं रही।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं समर्थक वैर भाव को,
मैत्री-भाव वढ़ाया था।
उसे तभी निर्गुट मण्डल ने,
मिल अध्यक्ष वनाया था।

सर्वमान्य नेता वन करके,
दुनियाँ को यह दिखा दिया।
नहीं न्यून नारी है नर से,
श्रेष्ठ-भाव को जिता दिया।

वीर-प्रसूता भारत माँ ने,
सिद्ध यही कर दिखलाया।
नारी होकर भी नर जैसा,
शौर्य-ओज था अपनाया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नि परीक्षा

प्रतिभाशाली गरिमाशाली,
गौरव का क्या करें बखान।
सर्व-विदित अज्ञान नहीं है,
पूज रहा है सकल जहान।

दिन-दिन बढ़ती प्रतिभा को लख,
जग में सभी अचंभित थे।
भारत की उन्नति की गति से,
मन ही मन आशंकित थे।

स्वार्थ-तत्व भी इस उन्नति से,
कभी नहीं सन्तुष्ट हुए।
षड्यन्त्रों के जाल विछाए,
दुरभि-सन्धि में युक्त हुए।

देश-जाति या धर्म किसी से,
था उनका सम्बन्ध नहीं।
मानवता के हन्तक थे वे,
था उन पर प्रतिबन्ध नहीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वार्थ-सिद्ध करने के हित वे,
प्रान्त-प्रान्त में, बिखरे थे।
जयचन्दों के वंशज बन कर,
भारत भू पर उभरे थे।

चोरी-डाका रक्तपात वे,
नित्य-निरन्तर करते थे।
कृत्य-अनैतिक कर-करके वह,
अपने घर को भरते थे।

धर्मस्थल को आड़ बनाकर,
क्रूर-मंत्रणा की भारी।
हथियारों का संचय करके,
करी युद्ध की तैयारी।

जिस मिट्टी से जन्म लिया था,
उसका मान भुला बैठे।
कुत्सित-कृत्यों को अपनाकर,
अन्तर्ज्ञान गँवा बैठे।

विस्फोटक शस्त्रों के द्वारा,
नर-संहार हुआ भारी।
नहीं शान्ति से काम चला,
तो फिर भेजी सेना सारी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्दोलन दब गया किन्तु वह,
आग न भीषण बुझ पाई।
देश-द्रोहियों ने मिलकर जो,
भीतर-भीतर सुलगाई।

क्या होने वाला था आगे,
इसे न कोई भाँप सका।
हाथ विदेशी किस-किस के थे,
इसे न कोई जाँच सका।

आतंकित था सारा भारत,
हत्याओं की थी भरमार।
उग्रवाद के षड्यन्त्रों की,
हुई इन्दिरा अन्त शिकार।

प्राणों की कीमत पर उसने,
देश टूटने से रोका।
रही जान कर भी अनजानी,
निज को ज्वाला में झोंका।

बहुत दुखी थी अन्तर्मन से,
बिखर न जाए मेरा देश।
अन्तिम-क्षण तक दिया सभी को
मिल कर रहने का संदेश।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्सर्ग

किन्तु इन्दिरा जी से कैसा,
विधि ने भी उपहास किया।
रक्षक ही भक्षक बन बैठे,
था जिनका विश्वास किया।

कहा सभी ने इस रक्षक को,
सेवा से तुम मुक्त करो।
किसी समय भी देगा धोखा,
नहीं मृत्यु से युद्ध करो।

किन्तु निडर-निर्भीक नारि थी,
नहीं बात पर ध्यान दिया।
पुत्र समान जिसे माना था,
उसने ही अवसान किया।

घेर सिंहनी को घर में ही,
कुछ स्यारों ने मार दिया।
कोमल–नेहिल–निश्छल माँ पर,
बेटों ने ही वार किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलों सी वह कोमल काया,
गोली से छलनी कर दी।
कापुरुषों ने निर्ममता से,
वीरा की हत्या कर दी।

किसी पंथ में और ग्रन्थ में,
हिंसा का उपदेश नहीं।
शस्त्र विहीन पुरुष नारी की,
हत्या का निर्देश नहीं।

नहीं सांस भी ले पाई वह,
नहीं एक अक्षर बोली।
आहत होकर गिरी सिंहनी,
चली दनादन थी गोली।

नहीं भरा मन राष्ट्रपिता के,
शोणित से खेली होली।
आज राष्ट्र-पुत्री के उर को,
फिर से भेद गई, गोली।

धरती सहमी अम्बर सहमा,
भू का कण-कण सहम गया।
इन्दिरा की निर्मम हत्या से,
जग का जन-जन सहम गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के जन गन मन पर यह,
लगा गहन था कटु-आघात।
आर्तनाद कर उठीं दिशाएं,
था यह ऐसा वज्र निपात।

आकस्मिक घटना को सुन कर,
हर प्राणी था सिहर गया।
काल–चक्र, थम गया अचानक,
महाकाल भी ठहर गया।

उस दिव्या के दुखद-निधन पर,
जग में हाहाकार मचा।
क्रुद्ध-क्षुब्ध जनता के मन में,
था ताण्डव साकार मचा।

महिमामय नारी का कैसा,
हृदय विदारक अन्त हुआ।
शान्ति-दूत नेहरू की बेटी का
रक्षक ही हन्त हुआ।

जिसने सुना तुरत उठ दौड़ा,
और न कुछ भी सोच सका।
प्रतिशोधों की ज्वाला भड़की,
जिसे न कोई रोक सका।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वासों के बल पर ही तो,
जग यह सारा चलता है।
किन्तु करे क्या कोई भी जब,
स्वयं विधाता छलता है।

अनहोनी हो गई घटित अब,
घिरा अँधेरा गहरा था।
दुआ एक भी काम न आई,
स्वयं विधाता बहरा था।

बिखर गईं थी ज्योति अचानक,
रेत भरी ज्यों अंजुरि में।
कैसी अद्भुत शक्ति समाई
थी उस कोमल पिंजर में।

दुखद निधन की हुई घोषणा,
जीवन का क्रम ठहर गया।
महाकाल के क्रूर-कृत्य पर,
प्राण सभी का सिहर गया।

सभी विवश हैं अन्त यहाँ पर,
पार न कोई बसती है।
राजा-रंक, भिक्षु या दानी,
मृत्यु सभी को ग्रसती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाह भरा था अन्तर्मन में,
फूट-फूट जन मन रोया।
दुखद-अन्त पर तो भारत की,
वसुधा का कण-कण रोया।

कल तक जो गतिमान रही वह,
आज अचानक सोई थी।
स्वयं सिद्ध जो रही आज तक,
वही यकायक खोई थी।

दिल्ली के गगनाञ्चल पर ज्यों,
काली चादर फैल गयी।
भारत जन के आहत उर पर,
नियति शैल सा डाल गई।

सघन अंधेरा छाया था वह,
ज्योति-पुंज सी चली गई।
शान्ति—दीप की उज्ज्वल-बाती,
हिंसा-तम से छली गई।

नहीं किसी ने भी सोचा था,
यों असमय उठ जाएगी।
गन्ध—कपूरी बन करके वह,
अम्बर में उड़ जाएगी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रपने ग्रौर पराए सब ही,
शोक-सिंधु में डूब गए।
रहे विरोधी जो ग्राजीवन,
द्वेष-भाव सब भूल गए।

ग्राज सभी उर थे उद्वेलित,
देखा ऐसा भीषण ग्रन्त।
दैव! दैव! हर-कण्ठ पुकारा,
कैसा क्रूर हुग्रा था हन्त।

चमचम करती भारत माँ की,
विन्दी को था नोंच लिया।
विषम-काल में भारत भर को,
शोकानल में झोंक दिया।

इन्दिरा, भारत नहीं विश्व के,
शान्ति-दीप की ज्योति वनी।
शान्ति-दूत वन करके ग्राई,
भू की दिव्य-विभूति वनी।

मरी नहीं वह ग्रमर हुई है,
भारत के जन गण मन में।
जीवित उसकी कथा रहेगी,
भारत भू के कण-कण में।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितनों ने तो समाचार सुन,
आत्मघात ही कर डाला।
भस्म हुए कितने ही जीवित,
मोह प्राण का तज डाला।

जहां पिता के साथ रहीं वह,
वरसों विहँसी–विकसी थी।
वहीं अन्त लाकर के रख दी,
प्रिय–इन्दिरा की अरथी थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तिम दर्शन

चार दिवस तक व्यक्ति करोड़ों,
अन्तिम–दर्शन को आए।
रोते और बिलखते जाने,
कितने नर–पुङ्गव आए।

श्रद्धांजलि देने फिर सारे,
देशों के प्रतिनिधि आए।
केवल अपनी नहीं विश्व के,
जन–जन की श्रद्धा लाए।

हर प्राणी की चाह यही थी,
एक वार दर्शन कर लें।
अपनी प्रिय-नेता की छवि को,
अपनी आँखों में भर लें।

दुख में डूब गया था भारत,
आज भव्यता खोई थी।
प्रिय-दर्शिनी के चोले में,
मौन दिव्यता सोई थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की नारी की गरिमा,
को करते थे कोटि प्रणाम।
उसके आगे थे नत मस्तक,
था जिसका उत्कर्ष महान।

पुष्पांजलि अर्पित करने को,
जनता का सागर उमड़ा।
प्रिय–नेता के दर्शन के हित,
जन-जन का अन्तर उमड़ा।

सभी देश भू–मण्डल भर के,
भारत आकर रोए थे।
भारत–मां के चरण सभी ने,
मानो आकर धोए थे।

एक बात थी हर जिह्वा पर,
उसके यश अरु गौरव की।
जयकारों से गूंजा था नभ,
उमड़ी सरिता सौरभ की।

दिव्य तेज था मुख–मण्डल पर,
मानो अब उठकर बोली।
किन्तु मूँद लीं एक बार जो,
नहीं पुनः आंखें खोलीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी नहीं जो बैठी थककर,
कभी नहीं जो रोई थी।
वही आज निश्चिन्त-मौन हो,
चिर-निद्रा में सोई थी।

नापी धरती की बेटी ने,
अम्बर की ऊँचाई थी।
इन्दिरा ने बलिदानी बन कर,
आज वीर-गति पाई थी।

शान्ति-हेतु उस शान्ति-प्रिया ने,
आजीवन ही यत्न किया।
निज प्राणों की आहुति देकर,
शान्ति-यज्ञ सम्पन्न किया।

धरती से आकाश होगई,
ऐसी-पावन गन्ध उड़ी।
भारत के जन-जीवन से वह,
आजीवन ही रही जुड़ी।

भारत की यह बेटी अपनी,
छाप धरा पर छोड़ गई।
लक्ष्मी - दुर्गा - पन्ना - जीजा,
से मानो कर होड़ गई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई खड़ी वह आज अचानक,
प्रथम-पंक्ति में वलिदानी।
सिद्ध किया था उस वीरा ने,
थी वह सचमुच क्षत्राणी।

बूंद-बूंद से कर्ज चुकाया,
उसने अपनी माटी का।
प्राण-दान दे मान किया है।
बलिदानी परिपाटी का,

लिखा गया इतिहास सदा ही,
और लिखा भी जाएगा।
उस वीरा के यश की गाथा,
तो जन-जन दुहराएगा।

आज नहीं, युग-युग तक जग का,
जन-जन मिल कर यही कहेगा।
जब तक सूरज चाँद रहेगा,
इन्दिरा तेरा नाम रहेगा।

सबकी अपनी ही थी इन्दिरा,
वह थी सबके लिये समान।
बिलख रहा था फूट-फूट कर,
आज इसी से सकल जहान।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचतत्व की भौतिक काया,
पचभूत में लीन हुई।
सूक्ष्म-रूप धारण कर इन्दिरा,
सहसा ब्रह्म-विलीन हुई।

माटी की काया माटी वन,
माटी में मिल जानी है।
धन्य वही प्राणी है जिसकी,
मिटती नहीं कहानी है।

देह नष्ट होती है लेकिन,
वे यश-गान सदा रहते।
देश-हेतु जो त्यागे जीवन,
उनके नाम सदा रहते।

धन्य-धन्य था तेज अनूठा,
धन्य-धन्य थी वह वाणी।
धन्य-धन्य था रूप निराला,
धन्य-धन्य थी कल्याणी।

जिस गरिमा से जीवित थी वह,
सदा भव्य-सत्कार हुआ।
उसी भाँति गरिमामय उसका,
था अन्तिम-संस्कार हुआ।

वहुत कठिन है इतना उठना,
पाना इतना यश और मान।
पाया जो जीवन में उसने,
द्विगुणित उससे गूंजा गान।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाप्रयाण

'तीन मूर्ति' से चली सवारी,
फूट पड़ा था जन गन मन।
आर्तनाद कर उठीं दिशायें,
व्याप गया भीषण क्रन्दन।

अन्तिम-यात्रा के दृश्यों ने,
सबके उर को हिला दिया।
कमल-पाँखुरी को था किसने,
यों मिट्टी में मिला दिया।

विद्युत जैसी चपला थी जो,
आज अचंचल सोई थी।
केवल भारत नहीं, विश्व ने,
एक भव्यता खोई थी।

पितृ-गेह से विदा हुई फिर,
वह भारत की बेटी थी।
दिल्ली दिल भर कर रोई,
वह पुष्प-सेज पर लेटी थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ इन्दिरा का कैसा वह,
महिमामय प्रस्थान महान।
गरिमामय ढंग से ही उसका,
हुआ जगत से महा-प्रयाण।

तोनों सेना के अधिकारी,
पंक्ति-वद्ध थे खड़े हुए।
नत-मस्तक था सारा भारत,
शस्त्र सभी थे झुके हुए।

कन्धा देकर स्वयं सभी ने,
हाथों-हाथ उठाया था।
वेटे ने फिर अपनी माँ को,
चन्दन-सेज सुलाया था।

उमड़ रहा था उस पल जन-जन,
जैसे सागर तूफानी।
देख धरा की विह्वलता को,
विधना को थी हैरानी।

दिव्य-प्रयाण हुआ दिव्या का,
दिव्य ज्योति वन कर साकार।
राष्ट्रपिता से और पिता से,
जा भेंटी वह भुजा पसार।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों पित्रों ने बेटी को,
अपने अंक लगाया था।
आजा बेटी कहकर मानो,
अपनी गोद सुलाया था।

कोमल काया को फिर सबने,
काष्ठ भार से दबा दिया।
अन्तिम-क्षण इस परम सत्य ने,
सबके उर को हिला दिया।

वर्तमान जो कल तक थी वह,
अब अतीत बन जाएगी।
स्वर्णिम-आभा दूर क्षितिज में,
सन्ध्या सी घुल जाएगी।

स्पर्श अग्नि का पाते ही वह,
ज्योति-पुंज सी दीप्त हुई।
सार्वभौम-शक्ति कल तक थी,
जलकर भस्मीभूत हुई।

मौन-विवश हो सबने देखा,
जीवन के इस सत्य को।
भू पर कोई बदल न पाया,
क्रूर-नियति के कृत्य को।

सबसे-सबल मृत्यु है जग में,
जिससे सब हो हारे हैं।
बड़े-बड़े योधा-बलियों को,
निगल गए अंगारे हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तिम संस्कार

मातृ शोक से विह्वल था सुत,
नहीं बैठकर रो पाया।
घोर विषमताओं ने उसके,
धीरज को था अजमाया।

वही पुत्र अब अपनी माँ का,
अस्थि कलश ले जायेगा।
सब कुछ पाएगा जीवन में,
माँ को कभी न पाएगा।

जिस माँ की दृढ़ता का कायल,
था सारा ही भू-मण्डल।
जिसकी एक वक्र–दृष्टि से,
कांपा करता था अरि दल।

वही अचानक एक याम म,
भस्मों का अम्बार बनी।
भारत–भाग्य–विधाता थी जो,
वह जलकर अंगार बनी,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब दुख का आवेग प्रबल हो,
वाणी-कुण्ठित हो जाती।
अन्तर्मन को ज्वाला में दह,
अश्रुधार भी खो जाती।

किया अस्थियों का संचय फिर,
भस्मी आन उठाई थी।
प्रियदर्शिनी-'इन्दिरा' कुछ ही,
कलशों-बीच समाई थी।

नगर-नगर वा प्रान्त-प्रान्त में,
जहाँ-जहाँ वह आप गई।
कलश वहीं ले चले प्रबन्धक,
जनता भी चुपचाप गई।

भक्ति-भाव से अस्थि-कलश पर,
श्रद्धा-सुमन चढ़ाए थे।
भारत भर में घूम कलश सब,
वापस दिल्ली आए थे।

नगरों-नगरों गूंजा करती
थी जो वाणी कल्याणी।
वह भारत की राजदुलारी
थी, इस युग की निर्माणी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश सशक्त बनाने के हित,
दिया रक्त का उसने दान।
एक दिवस पहले ही मानो,
किया मृत्यु का था आह्वान।

शब्द अचानक सत्य हो गए,
उर धरती का डोला था।
उस वीरा के मुख से मानो,
स्वयं काल ही बोला था।

भारत की आमूर्त-भव्यता,
आज न जाने कहाँ गई।
इन्दिरा भौतिक रूप बदल कर,
जन गन मन में समा गई।

दोप-शिखा बन कर जन्मी थी,
ज्योति-पुँज बन चली गई।
नारि-शक्ति के गौरव का,
प्रतिमान बना कर चली गई।

दिखा दिया इन्दिरा ने जग को,
भारत का उत्कर्ष-महान।
सिखा दिया है सारे जन को,
जोवन का उद्देश्य महान।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस प्रयाग में जन्म लिया था,
वहाँ अस्थियाँ जब आईं।
चलती वेला बाबुल के गृह,
मानो बिटिया थी आई।

मिलने को फिर प्रिय पुत्री से,
नगर सकल था उमड़ पड़ा।
क्रूर-दृश्य को भाग्य नियन्ता,
रहा देखता खड़ा–खड़ा।

धन्य हुआ आनन्द-भवन जो,
भारत का सिरमौर बना।
तीर्थराज में स्थित था वह,
आज स्वयं ही तीर्थ बना।

पुर-परिजन सबने ही आकर,
श्रद्धा–सुमन चढ़ाए थे।
उसी वृक्ष के नीचे बैठी,
जहाँ 'पिता–श्री' आए थे।

सुना सभी ने सुन कर भी,
विश्वास नहीं था हो पाया।
किन्तु नियति के नियमन का,
उपहास न कोई कर पाया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तिम-चाह इन्दिरा की थी,
"मुझे हिमालय ले जाना।"
उच्च-हिमानी चोटी पर जा,
मेरी भस्मी, विखराना।

पुत्र चला फिर भस्मी लेकर,
भर कर नभ में उच्च उड़ान।
उच्च-हिमालय सी ऊँची थी,
जिसकी माता उच्च-महान।

धन्य हुआ था आज हिमालय,
पाकर अपनी बेटी को।
जिसकी यश-गाथा ने चूमा,
जाकर उसकी चोटी को।

विखर गई वे पुष्प-पंखुरी,
मौन–हिमानी घाटी में।
गंगा को बेटी की माटी,
मिली हिमानी–माटी में।

अंक लगाया वड़े प्रेम से,
भारत माता डोल उठी।
धन्य-धन्य तू इन्दिरा बेटी,
दसों - दिशाएं बोल उठीं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर कर अमर हो गई उससे,
आज मृत्यु भी हार गई।
नहीं काल उसको ग्रस पाया,
वही काल को मार गई।

लेकर जन्म धरा पर इतना,
यश कितनों को मिला यहाँ।
उनका जग में मरण धन्य है,
जिनको रोया जगत यहाँ।

शक्ति-स्वयं अवतरित हुई थी,
जिसकी उपमा कहीं नहीं।
भारत क्या भू-मण्डल भर में,
प्रकटी ऐसी ज्योति नहीं।

हुआ न होगा कभी धरा पर,
श्रेष्ठ-गुणों का सम्मिश्रण।
नारी की काया में नर के,
तेज-ओज का प्रतिरोपण।

स्वर्णाक्षर में लिखी जायगी,
इन्दिरा जी की यश गाथा।
सदा-झुकेगा उस देवी को,
भारत-वासी का माथा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी कर्मठता की पूजा,
घर-घर में करनी होगी।
त्याग-तपस्या देश-प्रेम भी,
जन-मन में भरनी होगी।

दिव्य-लोक से आई थी वह,
दिव्य-लोक को चली गई।
दिव्य-लोक की दिव्य विभूति,
मृत्यु-लोक से चली गई।

लघु-दीपक की नन्ही वाती
ही यश का दिनमान बनी।
भारत माँ की राजदुलारी,
भारत का सम्मान बनी।

धन्य-धन्य था जीवन उसका,
धन्य हुआ है आज मरण।
महा-महिम देवी का करना,
सभी हृदय से अभिनन्दन।

भारत माँ के शीश मुकुट में,
मणि बन कर वह सदा रहेगी।
भारत के जन-जन के मन में,
'इन्दिरा' जीवित सदा रहेगी।

उस देवी के श्री चरणों पर,
पद्म-प्रसून सदा बिखरेंगे।
गर्व-करेंगे भारत वासी,
युग-युग तक स्मरण करेंगे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

439

उपसंहार

अन्धकार है सघन,
ज्योत्सना चली गई।

शक्ति वो कि युक्ति से,
विश्व को हिला दिया।
शक्ति वो कि वुद्धि से,
देश को उठा दिया।
वज्र सी अखंडता,
घात से छली गई।

एक वक्र दृष्टि से,
शत्रुता थी काँपती।
भीख द्वार-द्वार पर,
मित्रता की माँगती।
दुष्टता के हाथ वो,
दिव्यता छली गई।

सौम्यता की मूर्ति जो,
भव्यता का स्रोत थी।
श्रेष्ठता का मानदण्ड,
एकता की जोत थी।
पंखुरी गुलाब की,
आग पर तली गई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

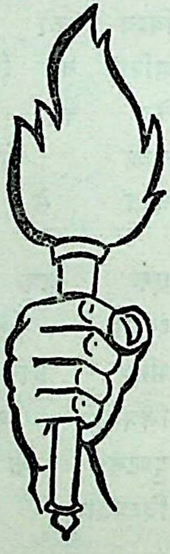

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

439

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथि...
पु०सं० 439
शास्त्री पुस्तकालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम—

जन्म ति

शिक्षा—

परिवार-

पात शिक्षा आव

पुत्र सेना में मेजर

संप्रति—अध्यापन एवं सम सेवा।

लेखन—प्रारम्भ से कहानी, लेख, नाटक तत्पश्चात् १६५० से काव्य लेखन।

विषय—जीवन-समाज, आध्यात्म, करुण, ओज एवं वीर रस की सामरिक उद्‌बोधक रचनाएं।

प्रकाशन—'पद्मदीप' (वीर रस) 'अश्रुविन्दु' (करुण रस) 'समर्पण' (भक्ति) 'प्रियदर्शिनी' खण्ड काव्य।

आकाशवाणी—नजीबाबाद, जयपुर, इन्दौर, जालन्धर और दिल्ली से काव्य प्रसारण।.

विशेष—अखिल भारतीय महिला समाज ऋषिकेश की १२ वर्ष तक अध्यक्षा रहीं, विश्व हिन्दी परिषद् की महिला शाखा मेरठ की अध्यक्षा, १६४२ में वीर पिता की पुत्री होने के कारण स्वतंत्रता आन्दोलन में कार्य किया और १६७१ में भारत-पाक युद्ध में पुत्र को माँ भारती के चरणों में अर्पित कर धन्य होने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ। इन्होंने उपनाम 'साधिका', साहित्य में चालीस वर्षों की साधना के पश्चात् ही रक्खा। लेखन में पति द्वारा सहयोग एवं प्रोत्साहन मिला इसी कारण ये गृहस्थी जीवन में भी काव्य साधना कर सकीं। इनकी रचनाएं स्वयं इनका परिचय हैं।

—प्रकाशक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.